Date 23.7.2022
B.A (Hons)

Dr. Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of History
S.R.A.P College

JANUARY 2022 / FEBRUARY 2022

13 January THURSDAY

इतिहास के अध्ययन में मार्क्सवाद की भूमिका।

- मार्क्स ने पूँजीवाद पर चातुर्दिक हमला किया। उसने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया देखिए जिसे आप पूँजीवाद कहते हो या सामंतवाद कहते हो वह महज एक उत्पादन की प्रणाली नहीं है वह एक राजनीतिक, समाजिक पद्धति है, वह एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण है तब उसने एक इतिहास की व्याख्या की। उसका Term था द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद।

एन्टोनियो ग्राम्सी (इटली) - मार्क्स के सिद्धांत को परिवर्तित किया

- मार्क्स, मैक्स वेबर, मैक्स मूलर - एशिया की कभी यात्रा नहीं की
- न्यूयार्क ट्रिब्युन - 1853 में मार्क्स ने न्यूयार्क में लिखा 1858 - में उसने 1857 के विद्रोह से प्रभावित होकर भारत के बारे में लिखा।

एशियाई उत्पादन प्रणाली - एशिया में तो ऊपर निरंकुश राजतंत्र है और नीचे प्रारंभिक समाजवाद है प्राच्य निरंकुश (निरंकुश शासक के सदर्भ में यह अवधारणा उभर कर आया। यह Term पहले J.S. मिल के द्वारा दिया गया था Oriental despotism शब्द दिया।

और जो निरंकुश शासक है वह अपनी नौकरशाही और सिंचाई व्यवस्था पर नियंत्रण रखता है और अधिकांश चीजों पर कर के रूप में ले लेता है और थोड़ा सा भाग जो बच जाता है उस पर किसान अपना गुजर बसर करते हैं और इस तरह से यह व्यवस्था सैकड़ों वर्षों से चलती आ रही है भारतीय समाज अपरिवर्तनशील है, उसमें परिवर्तन के गुण नहीं है अगर भारतीय समाज में परिवर्तन होता है तो कोई बाहरी तत्व के कारण ही होता है। उसका मानना है कि भारतीय समाज में परिवर्तन होगा तो ब्रिटिश हुकूमत अनजाने ही परिवर्तन ला देगा। वह

ब्रिटिश साम्राज्यवादीओं का पक्ष नहीं ले रहा है लेकिन कहीं न कहीं उसमे भी युरोपीय अहंकार का बीज छुपा है

- मार्क्सवादी इतिहास लेखन कार्ल मार्क्स का अनुसार नहीं है. क्योंकि जो भारतीय मार्क्सवादी है वह कार्ल मार्क्स के विरोध मे लिखा है. मार्क्स और भारतीय मार्क्सवाद एक नहीं है दोनों मे यही फर्क है जो लाल रंग लाली मे है

- उसने कार्ल मार्क्स के द्वन्दात्मक सिद्धांत को तो लिया है. लेकिन उसके एशिया उत्पादन प्रणाली के सिद्धांत को सबसे अधिक challenge मार्क्सवादी विद्वानों ने किया है। उसने कहा कि हम इस बात को नहीं मानते कि भारतीय समाज अपरिवर्तनशील है. ~~भारत~~ भारत मे भी अर्थव्यवस्था मे परिवर्तन होता है अर्थव्यवस्था मे होने वाले परिवर्तन के साथ राजनीति मे, समाज मे, एवं संस्कृति मे परिवर्तन होता चलता है। सबसे पहले D.D. कौशाम्बी, B.N दत्ता ये दो मार्क्सवादी विद्वान, जिन्होंने प्राचीन काल के इतिहास का अध्ययन किया और उन्होंने यह मान्यता रखी आगे R.S. Sharma, D.N. Jha, V.N. yadav है ये मार्क्सवादी परम्परा के विद्वान के रूप मे उभरे। मध्यकालीन इतिहास मे सबसे पहले मो० हबीब (अलीगढ़ विश्वविद्यालय मे इतिहास के विभागाध्यक्ष थे) ने 1952 मे "महमूद of गजनी" लिखकर सबसे पहले मार्क्सवादी इतिहास लेखन की नींव डाली। फिर इसके बाद इरफान हबीब भी मार्क्सवादी विद्वान रहे है। आधुनिक भारत के इतिहास मे रजनी पाम दत्त, ए० आर० देसाई, व एम० एन० रॉय

ये सब मार्क्सवादी इतिहास लेखन के रूप मे काम किया लेकिन ये सब पहली पीढ़ी के लेखक है इनके लेखन मे थोड़ी सी त्रुटि रही है जिसको कुछ हद तक सुधारा है विपीन चन्द्र, आदित्य मुखर्जी मृदुला मुखर्जी

जहाँ तक सीमाओ की बात है तो कोई भी विचार धारा अपने आप मे पूर्ण नही होती, न कोई व्यक्ति पूर्ण होता है और न संस्था पूर्ण होती है सबकी अपनी सीमा है लेकिन यह मान लेना कि मार्क्सवादी इतिहास ने भारतीय इतिहास का अपकार किया है यह मान लेना बिल्कुल गलत है

(1) मार्क्सवादी इतिहास लेखन के उद्भव से पहले राजवंश का इतिहास लिखा जाता था। राजाओं के बारे मे उनके युद्ध के बारे मे, उनके घटना क्रम के बारे मे इतिहास मे तारीखे महत्वपूर्ण होती थी।

मार्क्सवादी इतिहास लेखन ने सबसे पहला काम यह किया उसने कहा कि देखो इतिहास मे परिवर्तन महत्वपूर्ण है परिवर्तन कि जड़ उन्होने आर्थिक परिवर्तन मे खोजा। उन्होने कहा कि जब आर्थिक परिवर्तन होता है तो राज० समाज एवं संस्कृति मे परिवर्तन होता चलता है। पहले तो उन्होने इतिहास के अध्ययन मे अर्थव्यवस्था और समाज को खोजा। इससे पहले अर्थव्यवस्था और समाज की चर्चा बहुत कम होती थी।

राष्ट्रवादी विद्वान ने भारतीय समाज का आदर्श रूप प्रस्तुत किया लेखने

- मार्क्सवादी विद्वाने ने पूर्व मध्यकाल का Concept लाया परन्तु उनकी सीमा क्या थी? उनकी सीमा यह थी की हर कुछ को आर्थिक कारणो से देखते

[redacted]

B.A (Hons) part III
Subject - HISTORY
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of HISTORY
S.R.A.P College, Chakiya
Date - [redacted] 23.02.2022

सल्तनत कालीन स्थापत्य

भारत में स्थापत्य की प्राचीन शैली (शहतीरी शैली) प्रचलित थी। इस शैली की विशेषता होती थी स्थापत्य में स्तम्भ एवं शहतीर का प्रयोग। वही दूसरी तरफ भारत में तुर्की लोग मेहराबी शैली (अरकुएट शैली) लेकर आए थे। अरकुएट शैली के अंतर्गत मेहराब एवं गुंबद का उपयोग होता है। यह शैली बिजेन्टियायी शैली से ली गई थी। चूंकि इस प्रकार के स्थापत्य में स्तम्भों का प्रयोग नहीं होता है इसलिए मजबूती देने के लिए गारे (Mortar) के रूप में चूना तथा जिप्सम का प्रयोग आरंभ हो गया।

आरंभिक स्थापत्य

जब भारत में तुर्कों का आगमन हुआ तो आरंभ में उनके पास नए प्रकार के स्थापत्य का वक्त नहीं था इसलिए उन्होंने भारत में कुछ प्रचलित स्थापत्यों को ही मुस्लिम स्थापत्य के रूप में ढाल लिया। उदाहरण के लिए - कुतुबुद्दीन ऐबक ने - दिल्ली में कुव्वातुल इस्लाम मस्जिद, अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा का निर्माण किया।

इल्बरी वंश के स्थापत्य

किन्तु भारत मे स्थापित होने के पश्चात उन्होंने स्वतंत्र रूप में स्थापत्यों का निर्माण आरंभ किया चूंकि उन्होंने इस्लामी स्थापत्य के निर्माण के लिए भारतीय स्थापत्यकारों को लगाया। अतः भारतीय स्थापत्य की शैली के मुस्लिम

स्थापत्य का प्रभावित होना बहुत ही स्वाभाविक था। फिर आगे विभिन्न वंशो के अधीन मेहराबी शैली तथा शहतीरी शैली के बीच क्रमिक सामंजस्य होता रहा तथा फिर इस सामंजस्य के परिणाम स्वरूप एक स्वतंत्र भारतीय शैली का विकास हुआ।

गुलामी वंश के अधीन इल्तुमिश के द्वारा स्थापत्य का निर्माण आरंभ किया गया। उस के लिए उसने कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा स्थापित कुतुब मीनार के कार्य को पूरा कराया फिर उसने अपने बेटे राजकुमार मुहम्मद की स्मृति में सुल्तान-ए-गढ़ी का निर्माण कराया। आगे बलबन का मकबरा को एक महत्वपूर्ण स्थापत्य का दर्जा दिया जाता है तथा कहा बताया जाता है कि पहली बार इसी स्थापत्य में वैज्ञानिक प्रकार के गुम्बद का विकास हुआ। किन्तु नवीन शोधों से यह स्थापित होता है कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा प्रथम वैज्ञानिक प्रकार के मेहराब तथा गुम्बद का उदाहरण है।

चित्र